उ0प्र0 माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड

23, एलनगंज, प्रयागराज–211002

पाठ्यक्रम–प्रवक्ता
संस्कृत (05)

खण्ड क – साहित्य परिचय (गद्य, पद्य एवं नाटक)

निम्न ग्रन्थों के निर्धारित अंको के आधार पर शब्दार्थ, सूक्तियों के भावार्थ, शब्द का व्याकरणात्मक टिप्पणी, चरित्र चित्रण, तथा ग्रन्थकर्ता के परिचय।

कादम्बरी, (कथामुखम), नलचम्पू (प्रथम उच्छ्वास), शिशुपाल बधम् (प्रथम सर्ग), अभिज्ञान शाकुन्तलम और मृच्छकटिकम, गद्यकाव्य, खण्डकाव्य, महाकाव्य एवं नाट्यकाव्य के उद्भव और विकास का सामान्यस परिचय।

खण्ड ख – संस्कृत वाङमय में प्रतिविम्बित भारतीय दर्शन

इस खण्ड में श्रीमद्भागवद्गीता, तर्कभाषा, साख्यकारिका तथा वेदान्तसार के अनुसार प्रमुख दार्शनिक सिद्धान्तों का सामान्य परिचय।

खण्ड ग – काव्यशास्त्र

(साहित्य दर्पण एवं काव्य प्रकाश के अनुसार), काव्य लक्षण, प्रयोजन, शब्दवृत्तियां, ध्वनि, रस एवं निम्नलिखित अलंकारों का परिज्ञान–अनुप्रास, यमक श्लेष, उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, सन्देह, भ्रान्तिमान्, अतिशयोक्ति, स्वभोक्ति विरोभास तथा पारिसंख्या।

खण्ड घ – भाषा विज्ञान एवं व्याकरण

भाषा का उद्भव एवं विकास, ध्वनि परिवर्तन तथा अर्थपरिवर्तन, सभी गुणों की प्रतिनिधि धातुओं का दसों लकारों में रूप (लघु सिद्धान्त कौमुदी के आधार पर) सिद्वान्त कौमुदी के आधार पर सभी कारकों, विभक्तियों एवं समास का प्रक्रियात्मक ज्ञान। निम्नलिखित प्रत्ययों का प्रयोगात्मक ज्ञान–कृत–तव्यत, अनीयर, यत् धंश तृच..... क्त, क्तवतु, कत्वा, ल्ययू, शत् शान्च, तुमुन तद्धित–अक् क्तुप, मतुप, ढक, ढकी, फक, ख, यत् एवं छःस्त्री प्रत्यय–टाप डप्र, डीप् डीन। विशेष – उक्त प्रत्यय लघुसिद्धान्त कौमुदी के आधार पर प्रेष्टव्य है।

खण्ड ङ – रचना एवं पारिभाषिक पद

(क) संस्कृत सुभाषित एवं सूक्तियों का परिज्ञान, अशुद्धि परिमार्जन और वाक्य परिवर्तन।
(ख) नाटक में प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान।